मार्च: 2022 वर्ष : 5 अंक : 6

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, मार्च 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सबसे पहले मैं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च 2022) पर समस्त महिलाओं को हार्दिक बधाई देता हूँ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पूरे विश्व में 8 मार्च को मनाया जाता है. यह एक ऐसा दिन है, जब महिलाओं को राष्ट्रीय, जातीय, भाषाई, सांस्कृतिक, आर्थिक, या राजनीतिक स्तर पर उनकी उपलब्धियों के लिए पहचाना जाता है। यह अतीत के संघर्षों और उपलब्धियों को देखने का अवसर है। महिला दिवस को मनाने की शुरुआत अमरीका के न्यूयॉर्क शहर में वर्ष 1908 में महिला मजदूर आंदोलन से हुआ था। लगभग 15 हज़ार महिलाओं ने इसमें हिस्सा लिया था और बराबरी के अधिकार की मांग की थी, जिसमें कार्य अवधि को कम करने, अच्छा वेतन और वोटिंग के अधिकार के मुद्दे विशेष थे। पहला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस साल 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटज़रलैंड में मनाया गया था। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इसे औपचारिक मान्यता वर्ष 1975 में मिली और 8 मार्च को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में घोषित किया गया। वर्ष 2022 का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का थीम है - #BreakTheBias अर्थात महिलाएं व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी लेकर किसी भी परिस्थिति में लैंगिक पूर्वाग्रह और असमानता के लिए आवाज उठाने के लिए स्वतंत्र हैं।

मार्च का महीना हमारे संस्थान के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है क्योंकि भारत के स्वाधीनता वर्ष, 1947 में इस माह के 17 तारीख को ही हमारे संस्थान की स्थापना हुई थी। सिफ़री के अपने इस 75 वर्ष में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में ना जाने कितनी उपलब्धियां अर्जित की है और मछुआरों के आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए सदैव तत्पर रहा है। प्राकृतिक आपदा के समय संस्थान मछुआरों की आर्थिक सहायता तथा आदान वितरण कर उनकी सहायता की है। संस्थान ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए भी बहुत से निदान उपाय किया है। अतः मैं आप सभी संस्थान कर्मियों को हमारे स्थापना दिवस (17 मार्च) की हार्दिक शुभकामानाएँ देता हूँ।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने संरक्षण और सतत उपयोग सुनिश्चित करने के लिए विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाया

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा बोरती बील, उत्तर 24 परगना में धूमधाम से विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाया गया। कुल 60 हितधारकों ने सक्रिय रूप से इस कार्यक्रम में भाग लिया। औद्योगिक अपशिष्टों, कृषि अपशिष्टों आदि के निर्वहन के साथ मानवजनित हस्तक्षेपों से बील का पानी खराब हो रहा है। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने सभी हितधारकों को सामाजिक लाभ को ध्यान में रखते हुए आर्द्रभूमि का उपयोग सही तरीके से और बुद्धिमानी से करने का आग्रह किया। आरडब्ल्यूएफ डिवीजन के प्रमुख डॉ. यू. के. सरकार ने बील पर निर्भरशील मत्स्य किसानों को संबोधित करते हुए आह्वान किया कि आर्द्रभूमि बहुत ही मूल्यवान हैं और हमारे दैनिक जीवन और आजीविका के लिए इसे सही तरह से इस्तेमाल करना चाहिए। मत्स्य किसानों के साथ बातचीत करते समय कई मुद्दे सामने आए और इस मूल्यवान बील को उनके उपयोग के लिए कैसे और अधिक लाभदायी बनाया जाए यह भी चर्चा का विषय रहा। हमें इस बील को अपने घरेलू कूड़ेदान के रूप में नहीं इस्तेमाल करना चाहिए, प्रशिक्षण और विस्तार इकाई के प्रभारी डॉ. ए. के. दास ने वहाँ की महिलाओं को बील के आस पास के जगह की स्वच्छता

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा 2 फरवरी 2022 को गर्जन-बुलुतजन बील, कामरूप, असम में 'विश्व आर्द्रभूमि दिवस' मनाया

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 2 फरवरी 2022 को असम मत्स्य विकास निगम (एएफडीसी) लिमिटेड, गुवाहाटी, असम के सहयोग से गर्जन-बुलुतजन बील, कामरूप जिला, असम में विश्व आर्द्रभूमि दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. एस. येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक के

स्वागत भाषण से हुई। क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने आर्द्रभूमि के महत्व, उनके मूल्यांकन, प्रबंधन, बहाली और इन कीमती जल संसाधनों की देखभाल की आवश्यकता पर चर्चा की। इस वर्ष विश्व आर्द्रभूमि दिवस का मुद्दा 'लोगों और प्रकृति के लिए आर्द्रभूमि का महत्व' था। श्री हिमांशु बोरा, प्रबंधक, एएफडीसी लिमिटेड ने गर्जन-बुलुतजन बील में मत्स्य पालन और पारिस्थितिकी के बारे में जानकारी दी। संवाद सत्र में कुल 20 मछुआरों और अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. एस.सी.एस. दास, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'मेघालय में केज में मत्स्य पालन की संभावनाएं' पर मेघालय सरकार के प्रधान सचिव (मत्स्य पालन) के साथ उमियाम जलाशय के केज कल्चर स्थल संवादात्मक बैठक

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आईसीएआर अनुसंधान परिसर के सहयोग से, उमियाम री- भोई इलाके के आदिवासी (खासी) मत्स्य पालकों (महिलाओं सहित) की भागीदारी के माध्यम से उमियाम जलाशय में केज कल्चर परीक्षण कर रहा है। केज में मछली पालन प्रौद्योगिकी की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन री - भोई किसान संघ, जो पूर्वोत्तर पहाड़ी राज्य में अपनी तरह का पहला संघ है उसके सहयोग से संस्थान कर रहा हैं । केज कल्चर की सफलता की जानकारी मेघालय और असम के कई स्थानीय अखबारों सहित कई वेबसाइटों ने दी जा रही है। श्री एस.पी. अहमद, आईएएस, मेघालय सरकार के प्रधान सचिव (मत्स्य पालन) ने केज कल्चर स्थल का दौरा करने के लिए अपनी रुचि व्यक्त की है। श्री अहमद ने श्रीमती ए.एल. मावलोंग, एमसीएस, निदेशक (मत्स्य पालन); श्री पॉल तारियांग, मत्स्य पालन अधीक्षक, री-भोई जिले और मेघालय के अन्य मत्स्य अधिकारियों के साथ 3 फरवरी, 2022 को उमियाम जलाशय में केज कल्चर के स्थल का दौरा किया। इस अवसर पर उमनिउह ख्वान गांव में उमियम

जलाशय में केज कल्चर स्थल पर मेघालय में केज कल्चर की संभावनाओं पर एक संवाद बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के समग्र मार्गदर्शन में किया गया था; डॉ वीके मिश्रा, निदेशक, एनईएचआर, उमियाम

आईसीएआर (आरसी) और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के साथ-साथ डॉ. एस. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख (प्रभारी) मत्स्य इकाई, एनईएच क्षेत्र के लिए आईसीएआर आरसी, उमियाम द्वारा समन्वयित किया गया। आईसीएआर के दो संस्थानों के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी, डॉ. एस. येंगकोकपम (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. प्रणब दास, डॉ. एस. बोरा, श्री टी. तायुंग (वैज्ञानिक), श्री ए. दास (टीओ.) और श्री पी. महंत (एसटीए) और साथ ही श्री एकी बोरा, आई / सी एनएफडीबी एनई सेंटर, गुवाहाटी ने इस इंटरैक्टिव कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में री-भोई किसान संघ के तहत स्थानीय आदिवासी मछुआरों और मत्स्य पालकों (18 महिलाओं सहित) ने संघ के अध्यक्ष श्री डी. मजाव और स्थानीय ग्राम प्रधान के साथ भाग लिया। संवाद कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

डॉ. एस के दास ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और दिन भर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। उन्होंने प्रतिभागियों को सूचित किया कि मेघालय के उमियाम जलाशय में केज कल्चर 2019 से संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और आईसीएआर आरसी द्वारा एनईएचआर, उमियाम के लिए री-भोई किसान संघ के समर्थन से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली के मार्गदर्शन और संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास की पहल के कारण संभव हुआ। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने उल्लेख किया कि दोनों आईसीएआर संस्थानों ने केज कल्चर की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए और सिफ़री द्वारा विकसित केज कल्चर तकनीक को परिष्कृत करने के लिए मिलकर काम किया। उन्होंने जलाशय में किए गए तीन केज कल्चर संवर्धन परीक्षणों के परिणामों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत पर विशेष जोर देते हुए भारत के विभिन्न हिस्सों में संस्थान द्वारा की जा रही केज कल्चर गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान ने खुले पानी के लिए सिफ़री-जीआई केज, सिफ़री-एचडीपीई पेन और सिफ़री-केजग्रो फीड का व्यावसायीकरण किया है। श्रीमती ए. एल. मावलोंग ने राज्य में खुले पानी सहित केज कल्चर के विकास के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया। श्री पॉल तारियांग ने खासी में स्थानीय मछुआरों को विचार-विमर्श के बारे में बताया। श्री डी. मजाव ने स्थानीय समुदाय के लाभ के लिए जलाशय में केज कल्चर शुरू करने के लिए संस्थान और उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली दोनों को धन्यवाद दिया और कार्यक्रम के बारे में प्रतिक्रिया दी।

बातचीत के दौरान, प्रमुख सचिव और निदेशक (मत्स्य पालन), मेघालय ने दोनों आईसीएआर संस्थानों के वैज्ञानिकों, एनएफडीबी के प्रतिनिधि और केज कल्चर के लाभार्थियों के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। विचार-विमर्श के बाद, प्रमुख सचिव ने दोनों आईसीएआर संस्थानों से राज्य में केज कल्चर को बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए उच्च आजीविका सहायता और तकनीकी सहायता के लिए जलाशय के अन्य संभावित उपयोगों पर अध्ययन करने का अनुरोध किया।

एफएओ और भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन

भारत अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन जल निकायों के मामले में अद्वितीय और बहुत समृद्ध हैं जो नदियों, बाढ़ के मैदानी आर्द्रभूमि, मुहाना, लैगून, जलाशयों और बाढ़ के मैदानों, और ऊपरी झीलों जैसे मत्स्य पालन और स्टॉक संवर्धित मत्स्य पालन दोनों के अभ्यास के लिए उत्तरदायी हैं। अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन देश में लाखों लोगों की आजीविका और पोषण सुरक्षा का समर्थन करता है। अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों पर प्रलेखन, उनकी उत्पादकता और उपयोग बिखरे हुए हैं, राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी सार्थक डेटाबेस उपलब्ध नहीं हैं ।

इस करण से संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर को भारत के अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों पर अंतरराष्ट्रीय दृष्टि को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक दस्तावेज तैयार करने का कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी है।

एफएओ और संस्थान द्वारा पहली मसौदा रिपोर्ट पर चर्चा करने के लिए "भारत में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन और अन्तर्स्थलीय मत्स्य सांख्यिकी के संग्रह और विश्लेषण में क्षमता का निर्माण" पर 8 फरवरी 2022 को अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रलेखन रणनीतियों पर और महत्वपूर्ण समीक्षा और विशेषज्ञ राय प्रदान करने के लिए एक वर्चुअल वर्कशॉप आयोजित किया गया है।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यशाला के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारत में कुल अन्तर्स्थलीय पकड़ी गई मछली का 21% अन्तर्स्थलीय खुले पानी का योगदान है। डॉ. वी. वी. सुगुनन, वरिष्ठ विशेषज्ञ, एफएओ-सिफ़री परियोजना ने इस परियोजना और भारत में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों, उनकी उत्पादकता और उपयोग पर प्रलेखन की आवश्यकता का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस बार भारत में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर एक व्यापक दस्तावेज तैयार करने का एक बड़ा प्रयास किया गया है।

डॉ. बि . के. दास, संस्थान के निदेशक ने मसौदा रिपोर्ट पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। उन्होंने मसौदा रिपोर्ट के छह अध्यायों के बारे में चर्चा की, जिसमें अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधन, डेटा संग्रह के तरीके, सामाजिक-अर्थव्यवस्था, प्रबंधन, संस्थान और शासन शामिल हैं। एफएओ के मत्स्य संसाधन अधिकारी (अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन) डॉ. जॉन वाल्बो-जोर्गेन्सन ने टिप्पणी की कि इस दस्तावेज़ के लिए सिफ़री द्वारा बहुत सारी विस्तृत जानकारी एकत्र की गई हैं । उन्होंने कहा कि भारत में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन दबाव में है। जलीय कृषि और संस्कृति आधारित प्रबंधन की तुलना में अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों का प्रबंधन कठिन है।

डॉ. फर्ज-स्मिथ साइमन, एफएओ के प्रतिनिधि ने अपनी टिप्पणी में कहा कि दस्तावेज़ में पूरे नदी के आंकड़ों का विवरण शामिल होगा। उन्होंने कहा कि सामाजिक-आर्थिक और संस्थागत हिस्से पर अधिक जोर देने की जरूरत है।

वर्ल्ड फूड लॉरेट डॉ. एम. वी. गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि यह बहुत जरूरी दस्तावेज है। राज्य मात्स्यिकी विभाग द्वारा अन्तर्स्थलीय क्षेत्र में जलकृषि पकड़ने और मत्स्यपालन पर कब्जा करने के आंकड़ों को अलग करने की तत्काल आवश्यकता है।एनएफडीबी के प्रतिनिधि, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा, असम, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मिजोरम के मत्स्य विभाग ने भी इस अवसर पर बातचीत की।

डॉ. यू.के. सरकार, विभागाध्यक्ष, जलाशय और आर्द्रभूमि मत्स्य विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

एफएओ, मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मत्स्य विभाग, विशेषज्ञों, टेक्नोक्रेट, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के प्रतिनिधियों सहित 70 से अधिक प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया और मसौदा रिपोर्ट पर महत्वपूर्ण इनपुट और विशेषज्ञ राय प्रदान की।

भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 'मत्स्य पालन से जुड़े हितधारकों के लिए पीएमएमएसवाई योजना पर अभिविन्यास' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने हीरागोटा-रोवमारी-दिघाली बील, कामरूप जिला, असम में 'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) ' पर मात्स्यिकी से जुड़े हितधारकों के लिए अभिविन्यास' नामक एक प्रशिक्षण

कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया था। दिन भर चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 50 अनुसूचित जाति के मछुआरों और किसानों (युवाओं और महिलाओं सहित) ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास, और क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रमुख (कार्यवाहक), और कार्यक्रम संयोजक डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, के समग्र मार्गदर्शन में किया गया था। इसका संचालन केंद्र के वैज्ञानिक श्री ए.के. यादव, डॉ. प्रणब दास और डॉ. एस.बोराह ने किया।

कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. एस. बोराह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और दिन भर चलने वाले इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने अन्तर्स्थलीय जल निकायों के लिए संलग्नक कल्चर के प्रौद्योगिकियों पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. पी. दास ने अन्तर्स्थलीय खुले जल प्रणालियों में मत्स्य पालन बढ़ाने के विकल्प और अन्तर्स्थलीय जलीय कृषि के प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। श्री ए. के. यादव ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए पीएमएमएसवाई योजनाओं के अवलोकन पर एक व्याख्यान दिया । इस अवसर पर, आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए आर्द्रभूमि में छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन पर विंडो -3 के तहत आईसीएआर- वर्ल्डफिश सहयोगी परियोजना के तहत 'आर्द्रभूमि से जलवायु अनुरूप पोषक-मछली का सतत उत्पादन' विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

आयोजन समिति की ओर से सह-संगठन सचिव डॉ. प्रणब दास ने संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के.दास, को उनके समर्थन और मार्गदर्शन के लिए और क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रमुख (कार्यवाहक) डॉ. बी. के. भट्टाचार्य को हार्दिक धन्यवाद दिया। गुवाहाटी में इस प्रशिक्षण

भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान को सुंदरवन कृषि मेला ओ लोको संस्कृति उत्सव, कुलतोली, में मिला प्रथम पुरस्कार

सुंदरवन सबसे समृद्ध जैव विविधता वाले स्थलों में से एक है और इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में माना जाता है, जो गंगा ब्रह्मपुत्र डेल्टा का एक हिस्सा है, और जो 10,000 वर्ग किलोमीटर में फैला है। सुंदरबन के गांवों में लगभग 5.1 मिलियन लोग रहते हैं और इसकी जैव विविधता पर निर्भरशील हैं। यद्यपि आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है, लेकिन स्थानीय लोग वैकल्पिक गतिविधियों जैसे वन उत्पादों का संग्रह, बीज संग्रह, मछली पकड़ना आदि पर भी निर्भर करते हैं।

सिफ़री प्रौद्योगिकियों के माध्यम से छोटे और सीमांत मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए सुंदरबन ग्रामीण क्षेत्र में काम कर रहा है। संस्थान का उद्देश्य सुंदरबन के ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, उत्पादन वृद्धि और आय में वृद्धि करना भी है। संस्थान ने "सजावटी मत्स्य पालन", "नहर मत्स्य पालन विकास", परित्यक्त जल निकायों और व्यक्तिगत जल निकायों से मछली उत्पादन वृद्धि में कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया है। कौशल विकास प्रशिक्षण के अलावा, संस्थान ने आजीविका में सुधार के लिए मछली बीज, सजावटी मछली पालन के लिए एफआरपी टैंक,

मछली चारा, चूना आदि जैसे इनपुट प्रदान किए हैं। सुंदरबन के ग्रामीण मछुआरों को सिफ़री प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिससे उन्हें विभिन्न मत्स्य-संबंधी गतिविधियों के माध्यम से अपनी आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। संस्थान द्वारा कुलतोली में एक सजावटी गाँव समूह विकसित किया गया था जिसमें 35 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की महिलाएं सजावटी मछली पालन में लगी हुई हैं। वर्ष 2021-22 में संस्थान गतिविधियों से कुल 1620 लाभार्थी लाभान्वित हुए।

संस्थान ने 28 जनवरी से 6 फरवरी, 2022 तक 25वें सुंदरवन कृषि मेला ओ लोको संस्कृति उत्सव, कुलतोली, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में भाग लिया और नमामी गंगे (एनएमसीजी) परियोजना के तहत पहला पुरस्कार हासिल किया। संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास, ने 4 फरवरी 2022 को कार्यक्रम का दौरा किया और 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्राप्त किया। उन्होंने गंगा नदी मत्स्य पालन पर कोविड महामारी के प्रभाव पर भाषण दिया और मछुआरों और अन्य हितधारकों सहित स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता पैदा की। गंगा नदी में देशी मछलियों, हिल्सा और डॉल्फिन के संरक्षण की दिशा में भी जागरूकता पैदा की। उन्होंने कोविड के बाद की स्थिति में 500 लाभार्थियों को सिफ़री द्वारा प्राप्त विभिन्न इनपुट की गतिविधियों को भी साझा किया। 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत परियोजना की विभिन्न चल रही गतिविधियों, गंगा मछली और मत्स्य पालन से संबंधित पुस्तकों, पैम्फलेट, लीफलेट, फिशिंग गियर, पोस्टर आदि को 'नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा' मंडप में प्रदर्शित किया गया। मंडप में गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के लिए एनएमसीजी द्वारा समग्र गतिविधियों का वर्णन करते हुए एनएमसीजी के विभिन्न प्रकाशन शामिल थे। प्रदर्शनी में कई स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों, स्कूली छात्रों और मछुआरा समुदायों सहित स्थानीय लोगों की भागीदारी देखी गई। एनएमसीजी परियोजना के तहत चल रही गतिविधियों के बारे में विशेष रेडियो-चर्चा 28 जनवरी 2022 को आकाश वाणी द्वारा कवर की गई थी और 2 फरवरी 2022 को, रेडियो टॉक को ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन द्वारा कवर किया गया था। एनएमसीजी पवेलियन में प्रतिदिन लगभग 1200 से 1500 आगंतुक का आगमन देखा गया। स्कूली छात्रों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और मछुआरों को मछली विविधता के वर्तमान खतरों और प्रबंधन के तरीकों के साथ-साथ हिल्सा और डॉल्फ़िन संरक्षण के बारे में बताया गया। प्रदर्शनी में न केवल लोगों को गंगा नदी के संरक्षण, जैव विविधता, आदि के बारे में बताया गया बल्कि अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी बताया गया।

सिफरी द्वारा आर्द्रभूमि हितधारकों में जागरूकता हेतु एक वेबिनार का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 15 फरवरी, 2022 को 'किसानों की आय दोगुनी करने के लिए पारिस्थितिकी तंत्र आधारित एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया। यह वेबिनार राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी) द्वारा प्रायोजित किया गया जिसमें देश के पूर्वोत्तर राज्यों जैसे, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर और पश्चिम बंगाल के मछुआरों, मछली पालकों, मत्स्य अधिकारियों सहित मात्स्यिकी विद्यालयों के छात्र सहित कुल 97 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के गुवाहाटी अनुसंधान केंद्र के प्रभागाध्यक्ष, डॉ. बी.के. भट्टाचार्य के स्वागत सम्बोधन के साथ हुआ। इसके बाद संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने अपने उद्घाटन भाषण में पारिस्थितिकी तंत्र आधारित एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन पर एक संक्षिप्त परिचय दिया। डॉ. दास ने यह कहा कि सिफरी की प्राथमिकता पारिस्थितिकी तंत्र आधारित दृष्टिकोण तथा स्थायी अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के बारे में हितधारकों में जागरूकता और संवेदनशीलता पैदा करना चाहिए। इसके बाद डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने आर्द्रक्षेत्र (बील) में एकीकृत पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन पर एक विवरण दिया। डॉ. सिमांकु बोरा, वैज्ञानिक, गुवाहाटी अनुसंधान केंद्र ने उत्पादन और आय में वृद्धि के लिए बील क्षेत्र में घेरे में मछली पालन और इससे मत्स्य उत्पादन वृद्धि के बारे में बताया। संस्थान मुख्यालय से डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) पर एक प्रस्तुति दी। व्याख्यानों के बाद एक चर्चा सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. सिमांकु बोरा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया। इस वेबिनार का संचालन संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के दास के नेतृत्व में डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, डॉ अपर्णा रॉय और डॉ सिमांकु बोरा द्वारा किया गया।

"आय सृजन के लिए सतत जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर एनएफडीबी प्रायोजित जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र ने 14 फरवरी 2022 को "आय सृजन के लिए सतत जलाशय मत्स्य प्रबंधन" पर राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी) प्रायोजित एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ सिबिना मोल एस ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागी का स्वागत किया । संस्थान के निदेशक डॉ बसंत कुमार दास ने परिचयात्मक टिप्पणी की और जलाशय मत्स्य पालन के प्रबंधन और अन्तर्स्थलीय मछुआरों की आजीविका में इसके योगदान के लिए संस्थान द्वारा की जा रही अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी। बेंगलुरू केंद्र की प्रमुख डॉ. प्रीता पणिक्कर ने जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन की जानकारी दी। क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिक श्री. एम. कार्तिकेयन, डॉ. अजॉय साहा, डॉ. सिबिना मोल एस. और सुश्री जेस्ना पी.के., ने जलाशयों से मछली उत्पादन बढ़ाने और मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम वर्चुअल मोड पर आयोजित किया गया था और भारत के विभिन्न राज्यों के लगभग 100 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। मत्स्य विभाग के अधिकारियों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के छात्रों और विद्वानों और हितधारकों ने सक्रिय रूप से इसमें भाग लिया। डॉ. सिबिना मोल एस. ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीता पणिक्कर ने किया और समन्वयक डॉ. सिबिना मोल एस. थी ।

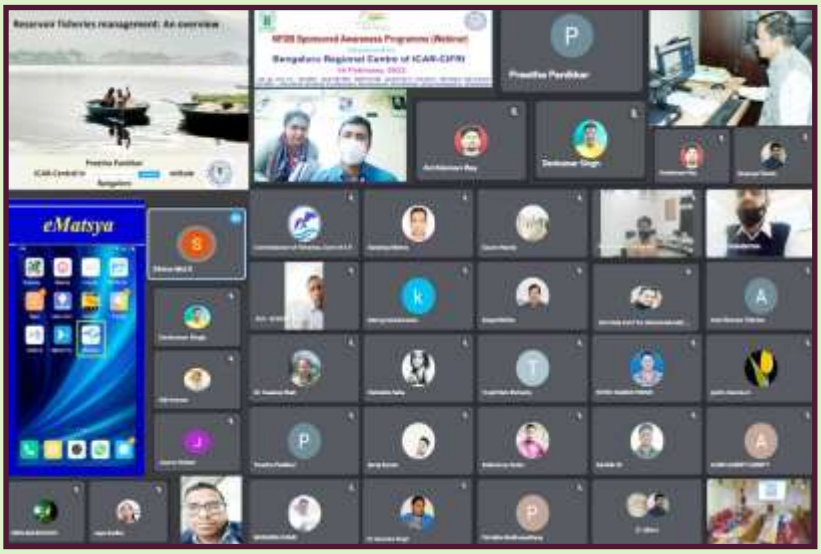

से प्राप्त ज्ञान को और अधिक उत्पादन को समेकित करने के लिए लागू करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ए के दास, प्रभारी, विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा सफलतापूर्वक किया गया और संस्थान के आरईएफ डिवीजन के वैज्ञानिक डॉ. डी.भक्ता द्वारा समन्वयित किया गया।

"नदीय पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी में मानवजनित हस्तक्षेप का प्रभाव" पर एक वेबिनार का आयोजन किया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने दिनांक 17 फरवरी, 2022 को राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित " नदीय पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी में मानवजनित हस्तक्षेप का प्रभाव" पर एक-दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार का उद्देश्य नदियों की सतत पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी के पुनरुद्धार हेतु रणनीति का विकास करना है। इस वेबिनार में महत्वपूर्ण संगठनों और मंत्रालयों जैसे पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी), केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) और सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (एनईईआरआई), राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी), जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली के प्रतिनिधि तथा विभिन्न राज्यों के मत्स्य विभाग के अधिकारी, विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के शोधकर्ता सहित 100 लोगों ने भाग लिया। वेबिनार का शुभारंभ संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास के स्वागत सम्बोधन के साथ किया गया। डॉ. दास ने गंगा नदी में वर्तमान मत्स्य विविधता और मछली प्रजातियों के संरक्षण और पुनरुद्धार की दिशा में सिफरी के प्रयासों गतिविधियों पर जोर दिया। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के सलाहकार डॉ. एस. कारकेटा ने सतत लक्ष्य-15 (Sustainable Goal-15) के तहत जैव विविधता संरक्षण की भूमिका, जैव विविधता संरक्षण में नदी घाटी परियोजनाओं का महत्व तथा सतत मत्स्य पालन और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए विज्ञान आधारित नीति विकास पर प्रकाश डाला। डॉ. एन.एन. राय, निदेशक, केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने नदी पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता संरक्षण में पर्यावरण प्रवाह पर ध्यानाकर्षण के साथ नदी जल धारा परिवर्तन में बांधों और बैराजों की भूमिका पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. संदीप कुमार बेहरा, जैव विविधता सलाहकार, एनएमसीजी ने गंगा नदी तंत्र से जुड़े विभिन्न खतरों और गंगा के नदीय हिस्सों के पुनरुद्धार हेतु राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के पहल पर प्रकाश डाला। डॉ. बेहरा ने एनएमसीजी के तहत संस्थान के गतिविधियों की सराहना की और स्थानीय हितधारकों की भागीदारी पर जोर दिया। डॉ. हेमंत भरवानी, वैज्ञानिक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपूर ने नीरी द्वारा विकसित दो प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला, जो पारिस्थितिक इकाइयों (आरईएनईयू) के साथ नालों का पुनरुद्धार और प्राकृतिक बायोरेमेडिएशन पर आधारित फाइटोरिड तकनीक के माध्यम से निष्क्रिय और प्रदूषित नदी और झील पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करते हैं। डॉ. हेमंत ने कहा कि ये दोनों प्रौद्योगिकियों का विशेष रूप से गंगा नदी पुनरुद्धार में सकारात्मक प्रभाव रहा हैं। डॉ. एस. सामंता, प्रभागाध्यक्ष, सिफरी ने भारतीय नदियों में मानवजनित हस्तक्षेप पर प्रकाश डाला।

धलाई जिला, त्रिपुरा के गंडाचेरा में स्थित डंबूर जलाशय में, केज के मछुआरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और मत्स्य पालन विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से

फरवरी 15-17, 2022 के दौरान गंडाचेरा अधीक्षक मात्स्यिकी कार्यालय में 'जलाशय उत्पादकता बढ़ाने के लिए पिंजरा संवर्धन प्रौद्योगिकी' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन श्री धनंजय त्रिपुरा, माननीय विधायक, त्रिपुरा द्वारा 15 फरवरी, 2022 को किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास और डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने प्रतिभागियों को ऑनलाइन मोड पर संबोधित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डंबूर जलाशय पर निर्भरशील कुल 50 मछुआरों ने भाग लिया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों डॉ. दीपेश देबनाथ, डॉ. एस.सी.एस. दास और श्री ए.के. यादव ने जलाशय में केज में जलीय कृषि के तकनीकी पहलुओं पर तीन दिवसीय कार्यक्रम पर चर्चा की । त्रिपुरा मत्स्य विभाग के अधिकारी श्री मदन त्रिपुरा, एस एफ; श्री टिमोथी संगमा, एफओ, श्री रत्नदीप साहा, एफओ ने डंबूर जलाशय में केज कल्चर में मछली पहल के बारे में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित थे। बातचीत के दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि केज की खेती एक गहन जलीय कृषि प्रणाली है जहां मछली की वृद्धि मुख्य रूप से फ़ीड इनपुट की गुणवत्ता और मात्रा, भंडारण घनत्व और पानी की गुणवत्ता की नियमित निगरानी पर निर्भर करती है। एक प्रौद्योगिकी भागीदार के रूप में संस्थान ने मत्स्य पालन विभाग, त्रिपुरा सरकार के सक्रिय सहयोग से 2020-21 से डंबूर जलाशय में केज संवर्धन प्रयोगों की शुरुआत की। त्रिपुरा के जलाशय

मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए यह किया गया । श्री डी. के. चकमा, टीसीएस, मत्स्य पालन निदेशक, त्रिपुरा सरकार ने संस्थान की विशेषज्ञता और मार्गदर्शन के साथ डंबूर जलाशय में केज में मछली की खेती को सफलतापूर्वक लागू करने में गहरी रुचि दिखाई है।

पहले और दूसरे दिन के तकनीकी विचार-विमर्श में डुंबूर जलाशय में केज में खेती की संभावनाएं,

अन्तर्स्थलीय जलाशयों में केज में खेती के बुनियादी पहलू केज कल्चर में प्रबंधन (डॉ. डी. देबनाथ), पानी और केज नेट (डॉ. एस. सी. एस. दास) की निगरानी का महत्व, केज कल्चर में मछली रोग और उनकी रोकथाम, निदान और उपचार (डॉ. एस. सी. एस. दास) और केज कल्चर के आर्थिक पहलू जलाशयों में (श्री ए. के. यादव) आदि विषयों पर चर्चा की गई। तीसरे दिन, डुंबूर जलाशय के नारिकेल कुंजा भाग में केज में खेती के लिए एक फील्ड विजिट का आयोजन किया गया था। क्षेत्र के दौरे के समय मछुआरों को जलाशय में स्थापित केज और भंडारण के लिए मछली के बीज की पैकेजिंग का प्रदर्शन किया गया। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा स्टॉकिंग कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई गई। श्री एन.जी. नोआतिया, डीडीएफ और नोडल अधिकारी-एनईएच, सुश्री दीपमाला रॉय, एसएफ और मनोज पॉल, कनिष्ठ अभियंता इस कार्यक्रम में त्रिपुरा मत्स्य विभाग की तरफ से उपस्थित थे।

सिफ़री द्वारा पारिस्थितिक आधारित एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन हेतु फील्ड प्रशिक्षण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) ने दिनांक 18 फरवरी, 2022 को पारिस्थितिकी तंत्र आधारित एकीकृत आर्द्रभूमि प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए नदिया जिले के हरिंगहाटा (पश्चिम बंगाल) में स्थित खलसी बील एक फील्ड प्रशिक्षण (फिशर फील्ड स्कूल) का आयोजन किया। इस प्रकार का प्रशिक्षण विश्व खाद्य संगठन (एफएओ) के फार्मर फील्ड स्कूल सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें मूल तौर पर समूह-आधारित वयस्क मछुआरों और किसानों को कृषि में आने वाली समस्याओं को स्वयं हल करने के लिए प्रशिक्षित करता है। इस प्रशिक्षण के लिए मछुआरा समुदाय की चालीस महिला लाभार्थियों को दो पारस्परिक संवादात्मक प्रशिक्षण के लिए चुना गया था।

सिफ़री ने मछुआरा समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उन्नयन हेतु बायोटेक्नोलॉजी विभाग द्वारा प्रायोजित सामाजिक क्षेत्र परियोजना और अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत खालसी बील को अपनाया है। इसके अंतर्गत मछुआरा समुदाय के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए पेन में मछली पालन, सजावटी मछली पालन, घरेलू तौर पर मुर्गी पालन एवं बागवानी तथा मशरूम की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे इस मछुआरों की आय वृद्धि की जा सके। सिफ़री के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने मछुआरों में आत्मविश्वास और

आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने की दिशा में खलसी बील में फिशर फील्ड स्कूल के लिए एक बहु-विषयक वैज्ञानिक टीम बनाया है, जिसका उद्देश्य बील मात्स्यिकी पर निर्भरशील मछुआरा समुदाय की आजीविका में सुधार करना है। इस टीम में सिफ़री से डा. अरुण पंडित, डा. ए. के. बेरा, डा. अपर्णा राय और डा. दिबाकर भक्त तथा विधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, नदिया, पश्चिम बंगाल से डा. पिंटू बंदोपाध्याय और डा. संचिता मंडल हैं।

इस फील्ड प्रशिक्षण के साथ "लागत प्रभावी प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आर्द्रभूमि पर निर्भर समुदाय की महिलाओं का सशक्तिकरण" पर एक ऑफ कैंपस प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में कुल 77 महिलाओं और 35 मछुआरों ने भाग लिया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी द्वारा बोरकोना बील, असम में 'अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन' पर 3 दिवसीय कुशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 16-18 फरवरी, 2022 के दौरान बोरकोना बील, बारपेटा जिला, असम में बील मछुआरों के लिए 'अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन' पर एक कुशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया था। 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बारपेटा जिले के कुल 50 मछुआरों और किसानों (युवाओं और महिलाओं सहित) ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक

डॉ. बि. के. दास और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के समग्र मार्गदर्शन में किया गया था। क्षेत्रीय केंद्र के

वैज्ञानिक डॉ. प्रणब दास और डॉ. सिमंकू बोराह ने कार्यक्रम के आयोजन सचिव और सह-संगठन सचिव के रूप में कार्य किया।

डॉ. प्रणब दास, आयोजन सचिव ने कार्यक्रम में अतिथि और प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस 3 दिवसीय कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने क्षेत्र के मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान और इसकी गतिविधियों के बारे में एक संक्षिप्त विवरण भी दिया।

इस 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलू, अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन का अवलोकन, अन्तर्स्थलीय जल निकायों के लिए संलग्नक कल्चर प्रौद्योगिकियां, खुले पानी में मत्स्य पालन वृद्धि विकल्प, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, मछली पोषण और फ़ीड प्रौद्योगिकी की प्रासंगिकता, मिट्टी का महत्व और पानी की गुणवत्ता, जैविक समुदायों की भूमिका, बील मत्स्य पालन के लिए प्रबंधन दिशानिर्देश, मत्स्य संसाधनों का संरक्षण, अन्तर्स्थलीय जलीय कृषि के लिए प्रौद्योगिकियों आदि को डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, डॉ प्रोनोब दास और डॉ सिमंकू बोराह द्वारा समझाया गया । डॉ. पी. बर्मन, डीएफडीओ (आई/सी), बारपेटा ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए पीएमएमएसवाई योजनाओं के अवलोकन पर एक सत्र दिया और प्रतिभागियों से सरकार द्वारा दिए गए कल्याणकारी योजनाएं का लाभ लेने का आग्रह किया। उन्होंने असम में मत्स्य पालन विभाग द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का भी संक्षेप में वर्णन किया। एएफडीसी के अधिकारियों श्री पी तालुकदार, श्री पी मेना, श्री टी डेका, श्री ए वैश्य, श्री एम बोरो और श्रीमती सी देवी ने कार्यक्रम में भाग लिया और प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

समापन सत्र के दौरान, डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने प्रतिभागियों से मछली उत्पादन को बेहतर करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक मछली पालन विधियों को अपनाने और उनकी आय और आजीविका बढ़ाने का आग्रह किया। प्रतिभागियों की ओर से बोरकोना बील के श्री बी. हलोई ने वैज्ञानिक मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों को शिक्षित करने के लिए संस्थान के प्रति हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त किया। डॉ. सिमंकू बोराह, सह-संगठन सचिव ने आयोजन समिति की ओर से संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

करने में उनके समग्र मार्गदर्शन के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए मैनेज, हैदराबाद को भी धन्यवाद दिया। इस 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए असम मत्स्य विकास निगम (AFDC) लिमिटेड, गुवाहाटी के प्रति भी उन्होनें धन्यवाद व्यक्त किया।

संस्थान द्वारा वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान ने 16-17 फरवरी 2022 के दौरान बैरकपुर मुख्यालय में वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने शांति के प्रतीक के रूप में कबूतर उड़ाकर किया। उन्होंने शोधार्थियों सहित सभी कर्मचारियों को इन दो दिनों में आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगितायों में शामिल होने और एक दूसरे के बीच दोस्ताना संबंध विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। सभी विभागाध्यक्ष, संयुक्त निदेशक सह रजिस्ट्रार ने कार्यक्रमों में भाग लिया और खेलों के महत्व की वकालत की। प्रतियोगितायों की शुरुआत रस्साकशी खेल से हुई, जिसके बाद पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए दो संबंधित श्रेणियों (>45 वर्ष और <45 वर्ष) में 100 मीटर दौड़ की प्रतियोगिता हुई। पुरुषों और महिलाओं दोनों प्रतिभागियों के लिए आयोजित किए गए विभिन्न इनडोर (बैडमिंटन, शतरंज और टीटी) और आउटडोर (एथलेटिक्स) प्रतियोगितायों में सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। क्रिकेट, वॉलीबॉल आदि टीम इवेंट भी आयोजित किए गए।

विजेताओं के लिए आकर्षक पुरस्कारों की व्यवस्था की गई। संस्थान के रिक्रिएशनल क्लब के सहयोग से डॉ. दिबाकर भक्त, श्री संथाना कुमार वी., श्री कौशिक मंडल, श्री रौशन कुमार, श्री पी.आर. महता, और श्री डी. सिंघा द्वारा समग्र खेल प्रतियोगिता का आयोजन और समन्वय किया गया।

भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की मदद सेजमशेदपुर और बोकारो के आदिवासी गांवों में पहली बार सजावटी मछली कुटीर उद्योग स्थापित

सजावटी मछली उद्योग सिर्फ ग्रामीण लोगों को ही नहीं आदिवासी गांवों की महिलाओं को भी आजीविका का एक बड़ा वैकल्पिक अवसर प्रदान करता है। झारखंड के जमशेदपुर शहर में लगभग 64 खुदरा और थोक सजावटी मछली की दुकानें हैं जो पश्चिम बंगाल के कोलकाता के बाजारों से सजावटी मछलियों की आमदनी करते हैं । झारखंड सरकार के मत्स्य पालन विभाग के सहयोग से सिफ़री सजावटी उद्योग को उत्पादन से लेकर विपणन तक सभी स्तरों में आगे ले जा रहा हैं जिससे जमशेदपुर और बोकारो की ग्रामीण आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और आजीविका विकास में सहायता हो सकें। उनके घरों के पीछे इन सजावटी मछली इकाइयों को स्थापित किया जा रहा हैं ।

वर्तमान में झारखंड सरकार के मत्स्य पालन विभाग ने पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर के ग्रामीण गांवों जैसे पुंसा, नागा और शिलिंग से 25 आदिवासी महिलाओं और बोकारो के केशरीडी गांव से 15 आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षण के लिए चुना हैं। प्रशिक्षण जिला मात्स्यिकी अधिकारी श्रीमती पेरीसेटी भार्गवी के सहयोग से जिला मुख्यालय पर आयोजित किया गया। सबसे पहले श्रीमती भार्गवी ने प्रतिनिधियों और आदिवासी मछुआरों का स्वागत

किया । सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में सजावटी इकाई के लिए इनपुट वितरित किए गए जिसमें 400L फाइबर टैंक, मछली के बीज, मछली का चारा, जलवाहक और सहायक उपकरण शामिल हैं जो कुल रु. 15,000 / व्यक्ति के बराबर हैं। निदेशक महोदय ने आदिवासी महिलाओं को सजावटी मत्स्य पालन से उनकी आजीविका में कैसे सुधार आएगा यह बताया। उन्होनें सजावटी मछली उद्योग और विपणन की संभावनाओं और अवसरों पर भी जोर देते हुए आने वाले दिनों में उद्यमशीलता लाने के लिए , खुद को स्वतंत्र रूप से स्थापित करके और सक्षम बनने के लिए कदम से कदम मिलाकर चलने की जरूरत को समझाया। डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक ने भी उन्हें सजावटी मत्स्य क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए खुद को सशक्त बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. श्रेया भट्टाचार्य ने मौली और स्वॉर्डटेल को मॉडल मछली के रूप में लेते हुए सजावटी मछली पालन का प्रदर्शन किया । कार्यक्रम का आयोजन 18 फ़रवरी को जमशेदपुर और 19 फ़रवरी को बोकारो में किया गया। चर्चा और लाइव प्रदर्शन के दौरान आदिवासी महिलाओं ने मछली पालन और विपणन के मुद्दों पर अपनी शंकाएं व्यक्त कीं। स्थानीय व्यापारियों के साथ , उनकी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई और स्थानीय थोक विक्रेताओं की मदद से विपणन के नए रास्ते स्थापित किए गए। झारखंड के इन दो जिलों में पहली बार सिफ़री द्वारा किए गए प्रयासों से माननीय प्रधान मंत्री के परिकल्पित दृष्टिकोण को काफी मदद मिलेगी और पीएमएमएसवाई द्वारा दिए गए लक्ष्य को बढ़ावा मिलेगा जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।

सिफरी द्वारा प्रशिक्षकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 22 फरवरी 2022 को राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित "आजीविका सृजन के लिए सतत जलाशय मात्स्यिकी" पर एक दिवसीय ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम देश के 10 से अधिक राज्यों के प्रशिक्षकों के कौशल क्षमता वृद्धि करने तथा जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन पर संबंधित विभागों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ सिफरी के निदेशक, डॉ. बि.के. दास के स्वागत सम्बोधन के साथ किया गया। डॉ. दास ने इस तथ्य पर जोर दिया कि जलाशय में मछली उत्पादन की अधिक संभावना होते हुए भी संभावित उत्पादन और वास्तविक उत्पादन में बहुत बाद अंतर देखने को मिल रहा है। अतः हमें इस उत्पादन अंतर को पाटने की दिशा में प्रयास करना होगा। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में छह व्याख्यानों को रखा गया था। डॉ. यू.के सरकार, प्रभागाध्यक्ष, जलाशय मात्स्यिकी प्रभाग और कार्यक्रम समन्वयक ने जलाशयों में मछली पालन के सतत प्रबंधन पर एक परिचय दिया। डॉ. ए.के दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार ईकाई ने मछली उत्पादन और आय बढ़ाने के लिए जलाशयों में घेरे में मछली पालन तकनीक पर प्रकाश डाला। डॉ. लियांथुमलुआ, वैज्ञानिक ने भारतीय जलाशयों की पारिस्थितिकी और उत्पादकता तथा डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने जलाशय मात्स्यिकी संवर्धन में जैविक समुदाय की भूमिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री गणेश चंद्र, वैज्ञानिक ने प्रतिभागियों को जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए संस्थागत सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक के प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत आजीविका विकास पर एक परिचय दिया। इस कार्यक्रम में देश के 10 विभिन्न राज्यों अर्थात हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, पुडुचेरी, त्रिपुरा, मणिपुर के मात्स्यिक विभागों के 200 से अधिक प्रशिक्षकों ने वर्चुअल माध्यम (जूम लिंक या यूट्यूब) से भाग लिया। डॉ. पी. मिशाल वैज्ञानिक, के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कटिहार, बिहार के मछली किसानों के ज्ञान, कौशल विकास और आजीविका सुरक्षा के लिए भाकृअनुप केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम

कटिहार, बिहार विविध अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों से सुशोभित है, जैसे - मौन, चौर, नहरें और नाले। प्रचुर मात्रा में जलीय संसाधनों के होने के बावजूद इस जिले में पर्याप्त मछली उत्पादन नहीं होता है। इस जिले में वैज्ञानिक तरीके से मत्स्य पालन और उत्पादन में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए, क्षमता निर्माण कार्यक्रम के रूप में 15-21 फरवरी, 2022 के दौरान संस्थान मुख्यालय में "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कौशल विकास कार्यक्रम का लक्ष्य मछुआरों की आय को दोगुना करना है। इस कार्यक्रम में कुल 31 सक्रिय मछली किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछली किसानों के कौशल विकास की आवश्यकता पर जोर दिया, जिससे उनकी स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो सके। उन्होंने मछुआरों को वैज्ञानिक ज्ञान और उनके अनुप्रयोगों को प्राप्त करके उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाने के लिए भी उन्हें प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम के दौरान तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, प्राकृतिक भोजन, सजावटी मछली सहित फ़ीड और फीडिंग प्रोटोकॉल सहित अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के साथ-साथ किसानों को इन-हाउस सैद्धांतिक और ऑन-फील्ड व्यावहारिक प्रदर्शन दोनों से अवगत कराया गया। इसके साथ ही उन्हें मछलियों के प्रजनन के पहलू, पोषण संबंधी आवश्यकताएं, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, केज कल्चर, विभिन्न मछली पालन गतिविधियों के आर्थिक पहलू, मछली विपणन, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना आदि से भी अवगत कराया गया। क्षेत्र के प्रदर्शन के दौरों में शामिल था: आईसीएआर- सीफा कल्याणी मछली फार्म , खमरगाछी और बालागढ़ प्रगतिशील मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजार, आदि। पुनः परिसंचरण एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), बायो-फ्लोक इकाइयां, सजावटी हैचरी इकाइयां और संस्थान की फीड मिल आदि के इस्तेमाल से भी उन्हें परिचित कराया गया। साथ ही विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं जैसे बुनियादी जल गुणवत्ता मानकों, लोकेशन का उपयोग करके मछली फ़ीड तैयार करने पर व्यावहारिक प्रशिक्षण, जैविक जीवों और मछली रोगजनकों की पहचान और उनके संबंधित उपचारात्मक उपाय आदि का भी ज्ञान कराया गया।

प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन कार्यक्रम के पूर्व और पश्चात दोनों में किया गया था, जो कि उनके कौशल और ज्ञान के विकास को देखते हुए प्रशिक्षुओं

की समग्र संतुष्टि को ध्यान में रखकर किया गया। विभाग के प्रमुखों ने अपने समापन भाषण में किसानों से इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को अपने संबंधित जल संसाधनों से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए लागू करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वय डॉ. ए के दास, प्रभारी, विस्तार और प्रशिक्षण प्रकोष्ठ द्वारा किया गया, और आरडब्ल्यूएफ डिवीजन के वैज्ञानिक श्री पी. मिशाल, और श्री डब्ल्यू आनंद मीती द्वारा समन्वयित किया गया।

पहाड़ी क्षेत्र में मात्स्यिकी विकास और मछुआरों की आजीविका को मजबूत करने के लिए पहल

पहाड़ी क्षेत्र के छोटे और सीमांत मछली किसानों के पास घर के पिछवाड़े छोटे तालाब हैं। मछली पालन पर तकनीकी सहायता और बुनियादी ज्ञान की कमी के कारण, वे अपने तालाबों में बहुत कम मात्रा में ही मछली पैदा कर पाते हैं। इन तालाबों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए, उन्हें तकनीकी सहायता प्रदान करके उनकी आजीविका में सुधार के लिए, अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) के तहत आईसीएआर-सिफ़री द्वारा "पहाड़ी मत्स्य विकास के विशेष संदर्भ के साथ अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक ने 22 फरवरी 2022 को किया था और यह कार्यक्रम 26 फरवरी, 2022 तक जारी रहेगा। इस 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिलें के मिरिक ब्लॉक के कुल 20 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। उनमें से 2 महिलाएं थीं। संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास ने किसानों के साथ बातचीत की और उन्हें प्रशिक्षण का पूरा लाभ लेने के लिए प्रेरित किया और उन्हें संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ मछली पालन में उनके विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कुछ प्रशिक्षुओं के प्रश्नों के उत्तर में वैज्ञानिक सलाह भी प्रदान की।

इस प्रशिक्षण से पहले, निदेशक महोदय के नेतृत्व में संस्थान की एक टीम द्वारा मिरिक में पहाड़ी मछली किसानों के साथ एक प्रारंभिक क्षेत्र का दौरा और चर्चा की गई थी। उन्होंने मछुआरों को मध्यम मान की ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्र में मछली पालन के वैज्ञानिक तरीके से अवगत कराया। साथ ही, उस कार्यक्रम के दौरान 100 मछली किसानों को अमूर कार्प और ग्रास कार्प के मछली बीज और मछली का चारा वितरित किया गया। चूंकि ठंडे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त जलीय कृषि पद्धतियों पर बुनियादी ज्ञान की कमी हैं, इस कारण किसान मछली पालन के लिए समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण में पहाड़ी मत्स्य विकास के विभिन्न पहलुओं पर उनका ज्ञान विकसित किया जाएगा जैसे पहाड़ी मत्स्य पालन के लिए एकीकृत विकास की गुंजाइश, अमूर कार्प मछली का प्रजनन, कॉमन कार्प, ग्रास कार्प, मछली पालन में सामान्य रोग और उपचार, मछली चारा प्रबंधन और तैयारी, पहाड़ी क्षेत्र में अन्तर्स्थलीय मछली प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य पदार्थ और उनका महत्व और सजावटी मछलियों का प्रबंधन। साथ ही, उन्हें संस्थान की सुविधाओं जैसे हैचरी, सजावटी प्रजनन, मछली फ़ीड और बायो-फ्लोक इकाई से भी अवगत कराया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारहों में डॉ. ए. के. दास और डॉ. ए. रॉय भी उपस्थित थे और उन्होंने मछली किसानों से बातचीत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.के. परिदा, डॉ. लियांथुमलुआ, श्रीमती पी.आर. स्वैन और श्री मितेश रामटेके ने मिलकर किया।

सिफ़री ने पश्चिम बंगाल केकिसानों योजनाकारों और शोधकर्ताओं के साथ इंटरफेस बैठक का आयोजन किया

भाकृअनुप-केंद्रीयअन्तर्स्थलीयमात्स्यिकीअनुसंधानसंस्थान (सिफ़री) ने सुंदरबन ड्रीम्स के सहयोग से 8 जिलों (नदिया, मालदा, मुर्शिदाबाद, बीरभूम, बर्दवान, उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना, दार्जिलिंग) के 24 किसान उत्पादक संगठनों के लिए एक इंटरफेस मीट की मेजबानी की। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग के 20 पहाड़ी मछुआरे और बिहार के 30 किसान 26 फरवरी, 2022 को संस्थान मुख्यालय बैरकपुर में मौजूद थे । इस इंटरफेस बैठक में कुल 125 हितधारकों ने भाग लिया। मत्स्य कृषकों की आजीविका, मत्स्य पालन पद्धति और मत्स्य उत्पादन वृद्धि से शुद्ध आर्थिक लाभ के लिए चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में पंचायत राज विभाग के वरिष्ठ अधिकार, सुंदरवन टाइगर रिजर्व और उपमहाप्रबंधक, जैसे सम्मानित व्यक्तियों ने भाग लिया ताकि किसान समुदाय को लाभान्वित करने वाले तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक नेटवर्क का निर्माण सही रूप से हो सकें । इसके अतिरिक्त पश्चिम बंगाल सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ . एम. वी. राव ने सभा को ऑनलाइन मोड के माध्यम से संबोधित किया।

इस अवसर पर श्री संतोषा गुब्बी, आईएफएस, अतिरिक्त सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकासविभाग, श्री एस जोन्स जस्टिन, उप फील्डनिदेशक, सुंदरबन टाइगर रिजर्व, श्रीएस. नियोगी, डीजीएम,

पश्चिम बंगाल राज्य निगम बैंक लिमिटेड, श्री राधाकृष्ण मंडल , सहायक निदेशक, उपभोक्ता विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत में सिफ़री केनिदेशक डॉ. बि . के. दास, ने सभी का स्वागत किया और किसानों द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सतत विकास के महत्व पर प्रकाश डाला और सुंदरबन के लोगों के विकास को सुनिश्चित करने में संस्थान के योगदान की चर्चा की । उन्होंने अम्फान, यास आदि चक्रवातीतूफानों के बाद राहत प्रदान करने के साथ-साथसुंदरबन के 2500 सेअधिक निर्धन किसानोंको मछली फिंगरलिंग, मछलीचारा, चूना और दवा जैसे आदानों के वितरण का उल्लेखकिया। उन्होंनेआमजनताकोभीजागरूककिया। विभिन्न जागरूकता, प्रशिक्षण कार्यक्रमों केमाध्यमसे उपलब्ध सिफ़री प्रौद्योगिकियां और सरकारी योजनायों की जानकारी भी प्रदान किया । श्री नियोगी ने अपने व्याख्यान में सतत विकास प्राप्त करने में छोटे किसानों के बीच उद्यमिता के लाभों पर ध्यान केंद्रित किया और आवश्यक बुनियादी ढांचे के निर्माण और इससे उबरने के तरीकों में बैंकों और अन्य वित्तीय सहयोग देने वाली संगठनों जैसे एसएचजी और सहकारी समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका केबारे में भी बताया। ऋण स्वीकृत करते समय प्रारंभिक बाधाएं जैसेसुरक्षा जमा आदि पर भी प्रकाशडाला । श्री जे. जोन्स ने वांछित विकास प्राप्त करने में सरकार और किसानों के बीच सहक्रियात्मक बातचीत के लाभों के बारे में बताया। गेस्ट ऑफ ऑनर, श्री गुब्बी ने कार्य के सरलीकरण के लिए सदस्यों के बीच समूह गठन और परिभाषित भूमिका के वितरण के महत्व पर प्रकाश डाला और कार्यभार को साझा करके, किसान उत्पादक कंपनियों जैसे संगठनों के माध्यम से आवश्यक पूंजी का विभाजन किया और सफलता की कहानियां भीसाझा कीं ऐसी कंपनियों से

जिन्होंने अपने सामूहिक प्रयास से बड़ी सफलता हासिल की है। उन्होंने व्यवसाय के संचालन में आसानी के लिए प्रमाणी करण की प्रक्रियाओं के बारे में उल्लेख किया और जैविक उत्पादों में वरीयता के मौजूदा रुझानों को ध्यान में रखते हुए जैविक खेती के महत्व का भी वर्णन किया और इस प्रकार पारंपरिक कृषि पद्धतियों की तुलना में अधिक उन्नयन प्राप्त किया। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों के ग्यारह किसानों को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए निदेशक (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) और माननीय अतिथियों द्वारा स्मृति चिन्ह, प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रमकेमुख्यअतिथिडॉ. एम वी राव ने एफपीओ के माध्यम से छोटे किसानों द्वारा सामूहिक प्रयासों के सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला और सुंदरबन क्षेत्र में एफपीओ बनाने में सिफ़री और सुंदरबन ड्रीम्स के प्रयासों कीसराहना की और सहयोग और एकजुटता पर जोर दिया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में किसानों के साथ एक आलोचनात्मक सत्र का आयोजन किया गया ताकि वे अपने अनुभव सभी के साथ साझा करसकें । श्रीमती मोनिका बिस्वास, श्री तपन कुमार बायन और अन्य पुरस्कार प्राप्त किसानों ने विभिन्न आईसीएआर संस्थानों से प्राप्त सहयोग के अपने मूल्यवान अनुभव कोसाझा किया।

इस समय महिला सदस्य इस प्रकार के एफपी ओ समूहों में अधिक भाग ले रही हैं जो सामाजिक विकास और शुद्ध आर्थिक लाभ के लिए इनएफपीओ के निर्माण मेंभागीदारी का संकेत देती हैं क्योंकि सुंदरबन बायोस्फीयर आजीविका के लिए केवल मत्स्यपालन पर निर्भरशील है और वरिष्ठ वन अधिकारियों की भागीदारी सुंदरबन में उनकी वैकल्पिक आजीविका के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ ए के दास, डॉ ए रॉय, डॉ पी के परिदा ने संस्थान के निदेशक महोदय ने किसानों के प्रश्नों के उत्तर दिए और उनकी समस्यायों का समाधान किया।

छत्तीसगढ़ के आदिवासी मत्स्य कृषकों की भागीदारी और सिफ़री की पहल से जलाशय मत्स्य उत्पादन में वृद्धि :

भारत सरकार के अनुसूचित जनजाति घटक के तहत भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान(सिफ़री) ने आदिवासी समुदाय द्वारा परिचालित और प्रबंधित10 जलाशयों में जलाशय के सहकारी समिति और छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग की सहयोगिता से एक उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम की शुरूवात की । संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास के नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया कि जलाशय में पेनकल्चर के लिए 2 टन पेन,

इंजन के साथ नाव और 2 टन मछली का चारा मछली के बीज के पालन के लिए उपलब्ध कराया जाएगा । कोविड महामारी की स्थिति और प्रक्रिया को गति देने के लिए एक ऑनलाइन बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के निदेशक श्री एन.एस. नाग; राज्य मत्स्य विभाग के बारह अधिकारी (एडीएफ, मत्स्य पालन); और छत्तीसगढ़ की दस प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्य शामिल थे। डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को बधाई दी और छत्तीसगढ़ के अन्तर्स्थलीय खुले पानी की मछली उत्पादन स्तर और उत्पादकता में सुधार के लिए पेन कल्चर के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने टिप्पणी की कि छत्तीसगढ़ के 10 विभिन्न जलाशयों में पहली बार सिफ़री के हस्तक्षेप से बीस मॉडल पेन प्रदर्शन किए जाएंगे। झारखंड में भी सिफ़री द्वारा इसी तरह के हस्तक्षेप किए गए जिससे वहाँ के जलाशय उत्पादकता स्तर में वृद्धि हुई है। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के दास और छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन निदेशक श्री एन.एस. नाग, दोनों ही इस बात पर सहमत हुए कि राज्य में स्थापित होने वाले पेन कल्चर की नियोजित गतिविधियों में प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों की बड़ी भूमिका है। पेन कल्चर तकनीक की स्थापना से इन जलाशयों से अतिरिक्त 200 टन मछली उत्पादन की आशा हैं। यह अनुमान किया जा रहा है कि अंगुलिकायों को पेन में प्रतिपालित किया जा सकेगा और नाबार्ड और दूसरे बैंकों से आर्थिक सहायता प्राप्त करते हुए अन्तर्स्थलीय मछुआरों की स्थिति में सुधार आएगा और यह एक मॉडल के रूप में स्थापित होगा । इससे परिवहन के करण मृत्यु दर और वांछित अंगुलिकायों की अनुपलब्धता कम हो जाएगी जो उत्पादन बढ़ाने में एक प्रमुख बाधा रही है। *पुंटियस सराना* मॉडल को भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) के साथ स्टॉकिंग किया जा सकता है, क्योंकि यह एक ऑटो ब्रीडर है और इससे एक सिस्टम स्थापित किया जा सकता है। डॉ. दास ने प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों को सलाह दी कि वे अपने उद्यम को एक रिवॉल्विंग फंड के साथ शुरू करें जिससे वे अपनी वित्तीय गतिविधियों को अपने दम पर बनाए रख सकें। छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के निदेशक श्री एन.एस. नाग ने बैठक में बताया कि वे अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में पेन लगाने के लिए तैयार हैं और इस नियोजित गतिविधियों में सिफ़री को रसद सहायता प्रदान करने के लिए भी तैयार हैं। प्राथमिक मछुआरा

सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों, राज्य विभाग के एडीएफ और सिफ़री के वैज्ञानिकों के बीच पेन कल्चर प्रबंधन प्रथाओं के बारे में बातचीत हुई, जिनका छत्तीसगढ़ में पालन किया जाएगा। बैठक में सिफ़री की ओर से डॉ. ए. के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. पी. के परिदा, डॉ.

लियामथुमलुआइया, डॉ. सतीश कौशलेश, डॉ. पियासी देबरॉय सहित वैज्ञानिकों की एक टीम उपस्थित थी।

डॉ. प्रवीण पुत्र, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी) का संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर का दौरा

डॉ. प्रवीण पुत्र, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने 28 फरवरी, 2022 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर का दौरा किया। उन्होंने भाकृअनुप- सिफ़री और भाकृअनुप-सीफा के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। उन्होंने प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना कार्यक्रम के तहत लक्ष्यों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। मछली उत्पादन और निर्यात को दोगुना करना, खाद्य मछली का प्रजनन और बीज उत्पादन आदि पर बल दिया । उन्होंने क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर के अन्य संगठनों के साथ संबंध विकसित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को समाज की बेहतरी के लिए उच्च प्रभाव वाले प्रकाशनों और पेटेंट प्रौद्योगिकियों के लिए प्रोत्साहित किया।

एनएफडीबी द्वारा प्रायोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण 'आजीविका सुधार की दिशा में आर्द्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन' का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ,बैरकपुर, ने आजीविका सुधार के लिए आर्द्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन पर 25 फरवरी 2022 को एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसे एनएफडीबी, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यक्रम का आयोजन सदस्यों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से किया गया था। प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों, राज्य के मात्स्यिकी विभागों के अधिकारी और भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (सीआईएफई) के छात्र और आर्द्रभूमि मात्स्यिकी प्रबंधन से जुड़े मात्स्यिकी महाविद्यालय के छात्र इस कार्यक्रम में शामिल हुए। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य प्रबंधन के अवलोकन पर एक उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य पालन के महत्व पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि भारत के कुल अन्तर्स्थलीय मछली पकड़ का 21% अन्तर्स्थलीय खुले जल मत्स्य संसाधनों से ही होता हैं। जलाशय और आर्द्रभूमि मत्स्य विभाग के प्रमुख डॉ. यू. के. सरकार ने भारत के आर्द्रभूमि में जलवायु प्रभावित पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन पर एक व्याख्यान दिया। वेबिनार में अतिथि वक्ता डॉ. पी. एस. अनंतन, प्रधान वैज्ञानिक, सामाजिक विज्ञान प्रभाग, भाकृअनुप-सीआईएफई, मुंबई ने आर्द्रभूमि मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए नीतिगत निहितार्थों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों में मत्स्य पालन में नीतिगत अनिवार्यताओं के बारे में बात की, जिसमें केस स्टडी और बहु-आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से मछुआरों की आजीविका को आकार देने वाले तंत्र शामिल हैं। डॉ. अरुण पंडित, संस्थान के अर्थशास्त्र और नीति इकाई के प्रभारी ने आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं और अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के उचित आर्थिक मूल्यांकन की आवश्यकता और औचित्य के बारे में एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री गणेश चंद्र, वैज्ञानिक, प्रशिक्षण और विस्तार इकाई, ने भारत की आर्द्रभूमि में संस्थागत व्यवस्थाओं पर एक व्याख्यान दिया। ऑनलाइन प्रतिभागियों के साथ व्याख्यान के अंत में एक बातचीत सत्र का आयोजन किया गया था जहां पीएफसीएस में मत्स्य पालन नीतियों और संबंधित संस्थागत तंत्र के स्तर पर कार्यान्वयन और सरकारी एजेंसियों के साथ संबंधों के मुद्दों पर चर्चा की गई थी। डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रशिक्षण एवं विस्तार इकाई ने संवाद सत्र का समन्वय किया। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में छात्रों, राज्य विभाग के अधिकारियों और पीएफसीएस सदस्यों सहित 167 प्रतिभागी शामिल थे। कार्यक्रम का समापन अर्थशास्त्र और नीति इकाई की वैज्ञानिक डॉ. पियाशी देबरॉय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पूर्व मिदनापुर जिले के सात तटीय आर्द्रभूमि की पारिस्थितिक और लिम्नोलॉजिकल मापदंडों से पता चला कि पिछले दशक में लगातार चक्रवाती घटनाओं के कारण इन आर्द्रभूमि पर प्रतिकूल प्रभाव (पारिथतिकी स्वास्थ्य में >25 ह्रास) पड़ा है। मछुआरों की आजीविका पर इन जलवायु असामान्यताओं के प्रभावों की पहचान की गई और दैनिक पकड़ और प्रजातियों की विविधता में कमी का आकलन किया गया।
- ट्राइक्लोसन, सौन्दर्य प्रसाधन उत्पादों में उपयोग किया जाने वाला एक फेनोलिक यौगिक को अन्तर्स्थलीय जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में एक उभरता हुआ संदूषक माना जा रहा है । इसमें उपस्थित तत्व (17β एस्ट्राडियोल, 11 केटोटेस्टोस्टेरोन, एफएसएच और जीएनआरएच) के कारण लेबियो कतला में प्रजनन हार्मोन की अधिकता देखी गई। हाइपोथैलेमिक पिट्यूटरी-गोनाडल (HPG) एक्सिस (एफएसएच, किस1, किस2 और वीटीजी) से जुड़े जीन के अप-विनियमन नियंत्रण को क्यूआरटी-पीसीआर द्वारा भी देखा गया था।
- बिहार के जमुई जिले के पक्षी अभ्यारण्य में स्थित दो जलाशयों - नागी और नक्ती में अध्ययन में यह देखस गया कि प्रवासी पक्षियों की शीतकालीन जमाव के तुरंत बाद जलाशयों में मछली और मैक्रोफाइट बहुतायत में भारी गिरावट दर्ज की गयी ।
- फरवरी में पटना में मछली की लैंडिंग 0.206 टन दर्ज की गई थी। इंडियन मेजर कार्प का उत्पादन 0.0157 टन दर्ज किया गया, जिसमें लैबियो रोहिता (रोहू) 0.015 टन (95.23%)था। नदी में दो संकटग्रस्त (NT) और मूल्यवान गंगा मछली प्रजातियों *बगरियस बैगेरियस (जाएंट नदी गूंच) और चीताला चीताला (क्लाउन नाइफ फिश) की उपलब्धता, क्रमशः 0.022 टन (11%) और 0.017 टन (8.5%) देखी गई थी।*
- प्रयागराज में गंगा नदी से जनवरी 2022 के दौरान मछली की कुल लैन्डिंग अनुमानतः 03.26 टन था। पिछले महीने की तुलना में कुल मछली पकड़ने में लगभग 46.00% की कमी आई है।

बैठकें

- सिफरी, भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो और एग्रीनोवेट इंडिया की तकनीकी वाणिज्यिक मूल्यांकन और विशेषज्ञ समिति की बैठक दिनांक 11 फरवरी 2022 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से तकनीकी और वाणिज्यिक व्यवहार्यता, हैंडहोल्डिंग आवश्यकता के साथ-साथ सिफरी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के वरीयता प्राप्त तरीकों के आकलन के लिए आयोजित की गई।
- संस्थान के निदेशक ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से दिनांक 28 जनवरी 2022 को "नदी घाटी परियोजनाओं" के लिए विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति की 23वीं बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने भारत के परिपेक्ष्य में भावी योजनाओं हेतु सीजीआईएआर केंद्रों की गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए दिनांक 7 फरवरी, 2022 को सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में सीजीआईएआर केंद्रों के साथ आभासी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 09 फरवरी 2022 को "मछली के बेहतर उत्पादन हेतु रोग और स्वास्थ्य प्रबंधन" पर एक दिवसीय राष्ट्रीय जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 फरवरी 2022 को ब्राह्मणी नदी बेसिन के क्लस्टर विकास और बरकोट, ओडिशा संबंधित बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 14-15 फरवरी 2022 को समुद्री प्लास्टिक मलबे पर ध्यान केंद्रित करते हुए समुद्री प्रदूषण का मुकाबला करने पर कार्यशाला में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 18 फरवरी 2022 को ऑनलाइन मोड के माध्यम से यूके और भारत के अनुसंधान समूहों और नवप्रवर्तकों के गठबंधन 'यूके-इंडिया एक्काकल्चर इनोवेशन क्लब' के शुभारंभ में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 28 फरवरी 2022 को ऑनलाइन मोड के माध्यम से राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान

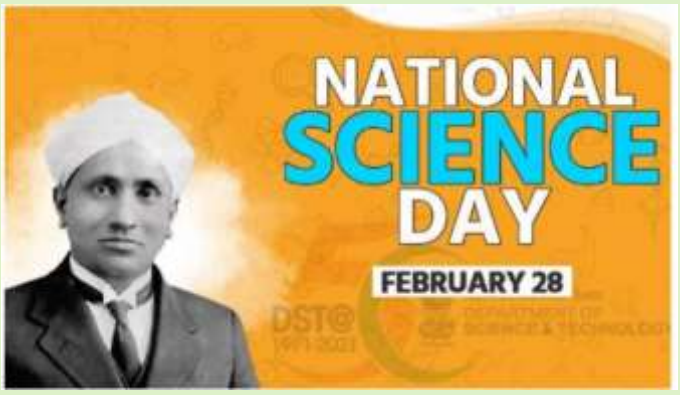

दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान में भाग लिया। यह व्याख्यान प्रोफ़ेसर आर. रामकुमार, प्रोफेसर और पूर्व डीन, स्कूल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई द्वारा दिया गया था। यह कार्यक्रम डॉ. टी. महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक के प्रारंभिक सम्बोधन के साथ शुरू हुआ था ।

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

दबंग दुनिया | प्रादेशिक | 04

www.dabangdunia.co

अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी आंकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण हेतु क्षमता निर्माण पर वर्चुअल कार्यशाला

सिफरी को सुंदरवन कृषि मेला-ओ-लोको संस्कृति उत्सव कुलतोली में मिला प्रथम पुरस्कार

आयोजन : सुंदरबन के 2500 से अधिक निर्धन किसानों को मछली फिंगरलिंग, मछलीचारा, चूना और दवा के बारे में जागरूक किया

प. बंगाल के किसानों- योजनाकारों और शोधकर्ताओं के साथ इंटरफेस मीट का आयोजन

ମତ୍ସ୍ୟଚାଷୀଙ୍କ ପାଇଁ 'ସିଫ୍ରି' ପକ୍ଷରୁ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ

CORPORATE BUZZ

ICAR-CIFRI knowledge initiative

ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore has been instrumental in disseminating knowledge on sustainable reservoir fisheries for employment generation. As a part of NFDB, Hyderabad sponsored ToT on February 22, the programme was aimed at building capacity of the officials of Department of Fisheries of the States in India enabling the ultimate stakeholders in reshaping their livelihood besides ascertaining nutritional security. Dr BK Das, director, CIFRI envisaged upon the need of such programmes where stakeholders from more than 15 states having ample reservoir resources took part. He emphasised how reservoirs are the sleeping giants with huge untapped potentials to bridge production gap in inland sector sustainably exploiting the resources. The virtual progamme focused upon ecology, biodiversity, fisheries enhancement protocol, enclosure culture for increasing per unit productivity of these very valued resources covering around 40 lakh ha in India. The stakeholders were informed about PMMSY schemes which would help in receiving support for increasing their income with enhanced fish production from the reservoirs.

सिफरी ने किया वेबिनार का आयोजन

नदीय पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी में मानवजनित हस्तक्षेप के प्रभाव पर चर्चा

इन विषयों पर डाला गया प्रकाश

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है